गुरु नानक – सबद २९

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ६

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीर्थ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

सार: अभिव्यक्तियाँ चाहे व्यक्तिगत हों, समूह की हों या सामाजिक हों, अपने माहौल द्वारा आकार लेती हैं। हालाँकि, जब मैत्रीपूर्ण विचार- संवाद और संचार आपस में जुड़ते हैं, तो वह विविध विचार और दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो हमारे माहौल में सकारात्मक परिवर्तन को प्रेरित करने की क्षमता रखते हैं। ध्वनियाँ, जैसे कि आभा मंडल की रूपांतरण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये सबद संगीतशास्त्र के रूपक की नुमाइंदगी की एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
कौन सा दरवाज़ा उस घर की ओर जाता है जहाँ सार्वभौमिक मूल्यों का सम्मान किया जाता है?

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
विविध पृष्ठभूमियों, विश्वास प्रणालि कई विद्वान व्यक्तियों द्वारा असंख्य आध्यात्मिक विचारों पर आपसी ताल मेल से चर्चा की जाती है।

केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥
कई नए विचारों को कई निपुण विद्वानों द्वारा सुंदरता से प्रस्तुत किया जाता गया है।

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
वायु, जल और आग की जीवन-निर्वाह शक्तियों के माध्यम से अदृश्य, सर्वव्यापी चेतना व्यक्त होती है। सर्वव्यापकता,नेक लोगों के अच्छे कामों से गूंजती है।

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
इरादों का हिसाब, चेतना, अवचेतना में गूंजता रहता है। चिंतन और मनन से सच्चाई का रास्ता जानने में मदद मिलती है।

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
स्वतंत्र स्वामी स्वयं निर्माता और पोषणकर्ता निरंतर विकास के माध्यम से अदृश्य सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति को प्रदर्शित करते हैं।

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

सच्चाई धार्मिकता के रास्ते में सर्वोच्च सत्ता दिव्यता के माध्यम से अदृश्य सर्वव्यापी चेतना के अस्तित्व को व्यक्त करती है।

गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥

ध्यान की अवस्था में प्रबुद्ध और चिंतन के माध्यम से तपस्वी अदृश्य सर्वव्यापी चेतना के अस्तित्व को व्यक्त करते हैं।

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

ब्रह्मचारी संतोष के माध्यम से और बहादुर लोग वीरता के माध्यम से, अदृश्य सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति को व्यक्त करते हैं।

गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

विद्वानों द्वारा ज्ञान की खोज और ऋषियों द्वारा बताए गए प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान से सर्वव्यापी चेतना के अस्तित्व का पता चलता है।

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥

मायावान अदृश्य, सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति को व्यक्त करने के लिए स्वर्ग और नरक की धारणा से मन को मंत्रमुग्ध कर उलझा देते हैं।

गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीर्थ नाले ॥

रचनाकार की अमूल्य रचनाएँ और उनके साथ बातचीत के माध्यम से प्राप्त ज्ञान एक अदृश्य, सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति को व्यक्त करता है।

गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥

वीरता के माध्यम से बहादुर, परोपकार के माध्यम से परोपकारी, निर्भयता के माध्यम से सूरमा अदृश्य सर्वव्यापी चेतना के अस्तित्व को व्यक्त करते हैं।

गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥

भौगोलिक क्षेत्र, आकाशीय क्षेत्र, सौर मंडल और आकाशगंगाएँ, सब एक साथ रहते हुए, अदृश्य सर्वव्यापी चेतना के अस्तित्व को व्यक्त करते हैं।

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥

अदृश्य सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति उन लोगों द्वारा व्यक्त की जाती है जो प्रकृति की इच्छा से संतुष्ट रहते हैं और सर्वव्यापीता के प्रति समर्पित हैं।

होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥

मन अस्तित्व के भीतर अनगिनत प्राणियों को नहीं समझ सकता जो अदृश्य, सर्वव्यापी चेतना की अभिव्यक्ति हैं। नानक कहते हैं कि हम उनका चिंतन कैसे कर सकते हैं?

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥

सृष्टि का प्रत्येक कण अदृश्य सर्वव्यापी चेतना की अभिव्यक्ति है, जो सर्वोच्च सत्य है, और इसका अस्तित्व अनंत वास्तविकता है।

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥

सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापी चेतना जिसने ब्रह्मांड का निर्माण किया, अतीत, वर्तमान और भविष्य, में मौजूद है।

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥

विभिन्न रंग रूप उस अदृश्य चेतना को प्रकट करते हैं जो हर चीज़ में मौजूद है; यहाँ तक कि सांसारिक भ्रम की माया भी इसकी रचना हैं।

करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥

अदृश्य सर्वव्यापी चेतना, सृजन के रूप में प्रकट होती है और पालन करती है, यही रचनाकार की महानता है।

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥

अदृश्य, सर्वव्यापी चेतना अपनी इच्छा के अनुसार प्रकट होती है, और कोई भी हुकम इसे बांध नहीं सकता है।

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

सर्वव्यापी अदृश्य चेतना ही सर्वोच्च सत्ता है, नानक कहते हैं इसलिए वह संतुष्ट रहते हैं। (२७)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि दुनिया में सब कुछ एक अदृश्य, सर्वव्यापी चेतना की अभिव्यक्ति है। इसलिए, यदि कोई अपने काम के नतीजे के लिए ख़ुद को पूरी तरह ज़िम्मेदार नहीं मानता है, तो वह संतुष्टि की स्थिति प्राप्त कर लेता है, जहां वह सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम से जुड़ा नहीं होता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com